मालवीय प्रकाश

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान की हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष -4 | अंक - 10 | जयपुर | जनवरी - अप्रैल 2021 | पृष्ठ संख्या - 1

निदेशक की कलम से ...

आचार्य (डॉ.) उदय कुमार आर. यारागट्टी
निदेशक- मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान परिवार के सभी सदस्यों व पाठकों का अभिनंदन व हार्दिक शुभकमानायें।

यह मेरा सौभाग्य है कि गत वर्ष में प्रगति के पथ पर सतत अग्रसर ये संस्थान देश के अन्य शीर्ष राष्ट्रीय प्रोद्योगिकी संस्थानों कि तुलना में अग्र पंक्ति में खड़ा है। संस्थान का इस प्रगति के पथ पर बढ़ने में मेरे साथ अनुभवी और कर्मठ शिक्षक व कर्मचारी समूह हैं जिसकी वजह से संस्थान आज वर्तमान स्तर तक पहुँचा है। हमारे लिए ये प्रसन्नता का विष्य है कि बीते वर्ष में संस्थान में ''इसरो'' ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी गतिविधियों के लिए एक सुविधा के रूप में कार्य करने वाले क्षेत्रीय शैक्षणिक केंद्र के स्थापना की है। ये संस्थान इस कार्य के लिए ऐसा पहला प्रौद्योगिकी संस्थान है।

यदि हम सृजनात्मकता की बात करें तो संस्थान में विविध सम्मेलन / कार्यशालाओं / एसटीटीपी / एफडीपी के क्षेत्र में गत वर्ष 70 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए गये।

संस्थान के साथ मणिपाल विश्वविद्यालय जयपुर, सीरी पिलानी, कवाजुलु-नटाल विश्वविद्यालय (दक्षिण अफ्रीका) पीएसयूटीआई (रूस) और चीन के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अनुसंधान भागीदारों के साथ बहुपक्षीय परियोजना वित्त पोषण योजना के तहत एक बहु संस्थान समन्वित परियोजना को मंजूरी दी गई है।

संस्थान का आर्किटेक्चर और प्लानिंग विभाग जीएचआरडीसी रैंकिंग में उत्तर भारत के अन्य आर्किटेक्चर संस्थानों के बीच में पहले स्थान पर और भारत के अन्य आर्किटेक्चर संस्थानों के बीच के 4 वें स्थान पर है।

मैं एक प्रशासक का कार्य भार ही नहीं देख रहा हूँ अपितु मैं एक मित्र, दार्शनिक और विद्यार्थियों के लिए एक मार्ग दर्शक हूँ जिसके ऊपर वे हर समय भरोसा कर सकते हैं।

आपकी प्रफुल्लता ही मेरे लिए प्रेरणा है। आपकी प्रखर मनीषा और जिज्ञासु संस्कार ही शोध जैसे कार्यों में आपको उत्साहित करते रहेंगे। आपका स्नेह और सम्मान ही मेरे विश्वास को मजबूती देता है।

मैं पूर्ण रूप से सृजनात्मकता, नवाचार और सतत् विकास में विश्वास रखता हूँ। मेरा लक्ष्य समाज के समक्ष ऐसे मानव संसाधन प्रस्तुत करना है, जिनका अंतिम लक्ष्य और एकनिष्ठ पहचान एक श्रेष्ठ अनुशासित और समाज के प्रति प्रतिबद्ध नागरिक के रूप में हो।

आप लोग युवा हैं आपमें साहस है आपमें बहुत कुछ कर गुजरने की क्षमता रखते है आप उस युग में जी रहे हैं, जिसमें स्रोतों की प्रचुरता है, आगे बढ़ने के बहुत से द्वार हैं आपकी लगन ओर मेहनत न केवल आपको अपितु आपके संस्थान को भी ऊंचाइयों तक ले जा सकती है। अतः अपना कार्य ईमानदारी से करते रहें। जो लोग विनम्रता और ईमानदारी के मार्ग पर चलते हैं उन्हें असफलता का खतरा कभी नहीं होता।

आप सभी को मेरी स्नेहिल शुभकामनाएं हैं कि आप देश या विदेश जहां भी रहे अपने संस्थान का नाम रौशन करें। आपकी गुणवत्ता से ही आज संस्थान वर्तमान स्तर तक पहुँचा है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके प्रयास ही भविष्य में इस संस्थान का नाम ऊंचाईयों तक ले जाएंगे।

भाषा के उद्गार और लेख महामना पंडित मदन मोहन मालवीय एक विलक्षण व्यक्तित्व में अभिव्यक्ति का माध्यम मातृभाषा है।अपनी भाषा में किसी भी लेख, कविता अथवा कथा लेखन सहज है। वे जिनकी लेखनी की प्रस्तुति इस अंक में है उनको भी मेरा अभिवादन। रचनात्मक लेखन से आप अपनी कौशलता का विकास कर सकते हैं। स्वस्थ्य और सूचनात्मक लेख समाज के विकास में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं अतः आप अपनी इस विधा की जारी रखे। मेरी ओर से सभी लेखकों और पाठकों को असीम हार्दिक शुभकामनायें।

आचार्य (डॉ.) उदय कुमार आर. यारागट्टी

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय एक विलक्षण व्यक्तित्व

''गाढ़ देशभक्ति से एकता उत्पन्न होती है, एकता से राष्ट्रीयता का भाव और राष्ट्रीयता के भाव से देश की उन्नति होती है।''

धर्म निष्ठ जीवन

ईश्वरभक्ति और देशभक्ति मालवीयजी के जीवन के दो मूल मन्त्र थे। इन दोनों का उत्कृष्ट संश्लेषण, ईश्वरभक्ति का देशभक्ति में अवतरण, तथा देशभक्ति की ईश्वरभक्ति में परिपक्वता उनके व्यक्तित्व का विशिष्ट सद्गुण था। उनकी धारण थी कि मनुष्य के पशुत्व को ईश्वरत्व में परिणत करना ही धर्म है। मनुष्यत्व का विकास ही ईश्वरत्व और ईश्वर है। और निष्काम भाव से प्राणिमात्र की सेवा ही ईश्वर की सच्ची आराधना है। इन सब की साधना ही उनकी जीवनचर्या थी, इसकी सिद्धि ही उनका जीवनलक्ष्य था। उनका सारा जीवन मनुष्यत्व की भावना से अनुप्रणित, ईश्वरत्व की भावना से ओत प्रेत था। उनकी देशसेवा निष्काम उपासना की भावना तथा लोक कल्याण की कामना से समन्वित और अलंकृत थी। वे निःसन्देह मनुष्यता की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति थे।

एक अनमोल शख्सियत

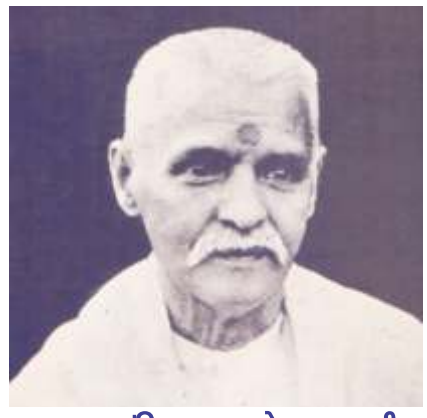

महामना पंडित मदन मोहन मालवीय

मालवीय उच्चकोटि के तपस्वी थे। सात्त्विक तप के सब सद्गुण उनमें विद्यमान थे। वे श्रीमद्भागवद्गीता मेंवर्णित कार्यिक, वाचिक और मानसिक तप के साधक थे। सब प्रकार के द्वन्द्वों को सहन करते हुए निष्काम भाव से, फल की इच्छा त्याग कर शम दम से सम्पन्न होकर,

शेष पृष्ठ 3 पर...

सम्पादकीय...

प्रिय पाठकों,

नमस्कार

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ हम हिंदी के स्वर्णिम भविष्य की भी शुभकामना करते हैं। आइये हम सब अपनी रचनाओं व भावों की विभिन्न अभिव्यक्तियों के जरिये हिंदी मातृभाषा को समृद्ध व सहज बनाने में अपना योगदान करें। ''मालवीय प्रकाश'' आपके योगदान को एक आधार प्रदान करने के क्षेत्र में एक पहल है। हमें इसे स्वीकर करना होगा कि परस्पर साथ रचनाकार और सम्पादक का साथ समाज व व्यक्ति दोनों को सुख पहुँचाता है और उनके उत्तरोत्तर विकास में सहायक होता है।

जब हम चीजों को स्वीकार करते हैं तो वह हमें पीड़ा पहुँचाने में असमर्थ हो जाती हैं। जब हम जीवन को स्वीकार करते हैं, तो हमें मृत्यु को भी स्वीकार करना चाहिये। सुबह आती है तो सुबह को स्वीकार करते हैं। सांझ आती है तो सांझ का भी प्रकाश होता है। हर वो वस्तु जो सत्य है उसे अगर हम स्वीकार कर लें तब दुःख को भूल जायेंगे क्योंकि एक अंर्तदृष्टि हमारे भीतर प्रस्फुटित होगी। जिस भी वजह से रोना, हंसना, सुख दुःख, जीवन मृत्यु है, हर परिस्थिति में हम उससे अनिलिप्त रहेंगे। तब ही जीवन का वास्तविक आंनद ले सकेंगे।

जहाँ तक हमारी मृत्यु को स्वीकार करने की बात है, वहाँ मृत्यु से हमारा अर्थ, देह की मृत्यु से होता है, हमारे अहंकार व संस्कारों की मृत्यु नहीं होती है, ये तो हमारी देह की मृत्यु के बाद भी हमारी आत्मा के साथ जाते हैं दूसरी देह में, यह वास्तविक मृत्यु नहीं है। वास्तविक मृत्यु है हमारे अंहकार, मन के विकारों की मृत्यु, जिसे हम अपने जीवन काल में ही प्राप्त कर सकते हैं, और रही फिर हमारी मृत्यु यानि कि आत्मा की मृत्यु की, तो वह तो संभव ही नहीं, आत्मा तो अमर है, तो मृत्यु सिर्फ देह की होती है, आत्मा के विकारों की हो सकती है, हमारी नहीं, तो मृत्यु से फिर डरे नहीं, उसे स्वीकार करें और उसके साक्षात्कार से पहले अपने मन, बुद्धि, अहंकार व संस्कारों की शुद्धि पर ध्यान दे।

सभी के जीवन के इस उद्देश्य को पूरा कर पाने के लिये शुभकामनाओं के साथ।

स्नेहाकांक्षी,

भवदीया,

डॉ. ज्योति जोशी
सम्पादिका एवं आचार्य, रसायन शास्त्र विभाग, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर
9413971604, 9549654852, 0141-2713350, jojo_jaipur@yahoo.com
malaviyaprakash.lokmat@gmail.com | jjoshi.chy@mnit.ac.in

ईमानदारी- एक जीवन शैली

''ईमानदारी – एक जीवन शैली'' यह वाक्य जीवन के उच्चतम, स्वस्थ और आदर्श गुणों के सिद्वान्त की गइराई को दर्शाता है। एक प्रसिद्व कहावत के अनुसार ''ईमानदारी एक सर्वश्रेष्ठ नीति है और विश्वास का दूसरा पर्याय है।'' ईमानदारी अपनाकर भ्रष्टाचारिक तत्वों जैसे लालच, रिश्वतखोरी, कालाबाज़ारी एवम अनीतिपूर्ण कृत्यों का उन्मूलन सम्भव है। हर प्रकार के अपराध, बेइमानी और नकारात्मकता से परे, यह जीवन में स्फूर्ति भरकर दृढ़ निश्चयी सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। ईमानदारी हमारे अन्दर लोक कल्याण की भावना का विकास करके प्रेम एवं दया भाव उत्पन्न करती है। इसलिए ईमानदार व्यक्ति को हमेशा समाज में मान–सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। ईमानदार व्यक्ति हमेशा सुखी, शान्ति व आत्मविश्वास से परिपूर्ण रहते हैं व अपराध रहित जीवन जीते हैं।

कहा गया है कि ईमानदारी भगवान द्वारा उपहार के रूप में प्रदान किये गये जीवन में प्रतिष्ठा से जीने का उपकरण है जो हमें बहुत से लाभों से लाभान्वित करती है। ईमानदारी हमें सभी चिन्ताओं, परेशानियों, तनावपूर्ण जीवन और बहुत सी बीमारियों से दूर रखती है।

हालांकि आज के समय में ईमानदारी से रहना बड़ा ही कठिन है, लेकिन असम्भव नहीं। इस नैतिक चरित्र को केवल अभ्यास के माध्यम से ही विकसित किया जा सकता है जिसके लिए धैर्य और लगन की पराकाष्ठा अति आवश्यक है। यह और भी अधिक सामानी से हो सकता है यदि सभी अभिभावक एवम् शिक्षक राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझें और अपने बच्चों व विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों से अवगत करायें।

उपरोक्त कथन का सार है कि ईमानदारी सर्वसमाधान होने के साथ–साथ हमें जीवन में अच्छी व बुरी परिस्थितियों में सही और निष्पक्ष निर्णय लेने में समर्थ बनाती है। बावजूद इसके, आजकल ईमानदार लोगों की संख्या में कमी है। परिणाम स्वरूप समाज में प्रत्येक जगह भ्रष्टाचार व नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन एक ज्वलंत समस्या बन गयी है। जिसके निराकरण के लिए आत्ममंथन व राष्ट्रीय प्रयासों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

आदर्श, ईमानदारी एवम् कर्त्तव्यपरायणता पाठ्यक्रमों का हिस्सा बनकर रह गये है। अर्थव्यवस्था व मानव जीवन को भ्रष्टाचार मुक्त करने के लिए किताबी ज्ञान को व्यवहार में भी अपनाना होगा। औद्योगिक तथा रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण के साथ–साथ सभी संस्थान अपने विद्यार्थियों को देश तथा समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों का ईमानदारी से निवार्ह करने का अनिवार्य प्रशिक्षण की व्यवस्था करें तथा देश के विकास एवम् उत्थान के लिए ईमानदारी के सतत् प्रयास को अपनाने के लिए जागरूक व प्रेरित करें। हालांकि इसे अधिक प्रभावी बनाने के

शेष पृष्ठ 3 पर...

इस अंक में ...

विवरण	पृष्ठ संख्या		
निदेशक की कलम से ...	1	शिक्षक	2
महामना - एक विलक्षण व्यक्तित्व	1	मात - पिता	2
सम्पादकीय	1	मैं का अंतर्द्वद्व	3
ईमानदारी- एक जीवन शैली	1	कशिश	3
शक्ति स्वरूप बेटियाँ	2	सम्मान : एक आदरपूर्ण भाव	4
मन के उद्गार	2	लेख वनवास कथा	4
मृत्यु क्या है-	2	मैं तेरा होना चाहता हूँ	4
वो बचपन	2	जमाने की खुशी	4
		लक्ष्य प्राप्ति प्रसन्नता अर्थात् सफलता	4

शक्ति स्वरूप बेटियाँ

नवरात्रे में हम देवी के नौ रूपों की पूजा करते हैं। नौ दिन तक उनकी उपासना और उसके बाद कन्या पूजन कर उन्हें भोजन कराया जाता है। लेकिन उसके बाद ये बेटियाँ फिर उस सामाजिक सोच का हिस्सा बन जाती हैं, जो इन्हें आगे बढ़ने से रोकता है। ऐसे में भारत मे एक छोटे से गाँव की पायल जांगिड़ और स्वीडन की छोटा धनवर्ग से कुछ ऐसा किया कि आज दुनिया की हर बेटी उनके जैसा बनाना चाहती है।

राजस्थान के अलवर में एक गाँव हींसला की बेटी पायल जाँगिड़ अभी पढ़ाई कर रही है। न्यूयार्क में एक अन्तरराष्ट्रीय सम्मान समारोह में इसकी कही गई चंद पंक्तियों ने दुनिया की हर उस बेटी का ताकत दी? जो कल तक किसी न किसी डर से अपनी आवाज दबाए बैठी थी। स्कूल जाने की उम्र में ना सिर्फ अपनी शादी रोकने के लिए पायल को अपने परिवार व समाज से लड़ना पड़ा बल्कि हर उस बेटी के लिए पायल ने अपनी आवाज बुलन्द की जो बाल विवाह की भेंट चढ़ा दी जाती है। पायल जांगिड़ ने ना सिर्फ बाल विवाह बल्कि मजदूरी के अभिशाप से बचपन को आजाद कराने के लिए भी पुरजोर कोशिश की अपने गाँव के बच्चों की मदद से इसे एक मिराज बनाकर बच्चों को उनका हक दिलवाया।

पायल की तरह स्कूली बस्ता उठाए एक और बच्ची ने अपने अनोखे अंदाज में एक ऐसी समस्या पर दुनिया का ध्यान आकर्षित किया है। ये बच्ची है स्वीडन की ग्रेटा धनवर्ग। जिस उम्र में बच्चे खुद का भी ख्याल ढंग से नहीं रख पाते हैं। उस उम्र में ग्रेटा ने पूरी दुनिया को बचाने के एिल ऐसा कदम उठाया कि आज उसके पीछे लाखों बच्चों की भीड़ खड़ी हो गई। पर्यावरण पर खतरे के खिलाफ अपने देश की संसद के बाहर इस बच्ची ने हर शुक्रवार नो स्कूल डे का बैनर को लेकर ऐसा मुद्दा उठाया कि उसकी गंभीरता को युनाईटड नेशन ने समझा। यहाँ जब ग्रेटा ने अपनी बात जिस अंदाज में पूरी दुनिया तक पहुँचाई, वो देखकर वाकई से सोचना पड़ा, क्या हमें ऐसी दुनिया अपनी आने वाली पीढ़ी को विरासत में सौपनी चाहिए।

बेटियों को देवी का रूप कहा जाता है, लेकिन इन बेटियों ने वाकई अपने शक्ति स्वरूप होने को ना सिर्फ साबित किया, बल्कि खुद से आगे बढ़कर समाज, देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए सोचा।

- मनीष कुमार जांगिड़, तृतीय वर्ष (PPE)

मृत्यु क्या है-

जन्म ही मृत्यु है, क्योंकि
जीवन से अंत तक,
प्रत्यक्ष या परोक्ष,
मरता है प्राणी,
अनंत बार।
क्षणभंगुर है नश्वरता,
नाशवान हर घड़ी
फिर कौन हूँ मैं,
और मेरा
क्षितिज से चहुँ ओर,
जूझता है प्राणी,
पर हर दिशा
मृत्यु देती उसे, संघर्ष बन।
ईर्ष्या रूपी विष,
तृष्णा की खोह में
छद्मावतरित हो,
प्रस्फटित हो देता है
मृत्यु ।
संतति से जरावस्था में
अवहेलना मृत्यु है।
अहं जब तक
ना बदले शिवोअहं में
तब तक मृत्यु है।

नेमीचंद मावरी निमय
शोधार्थी, रसायन, शास्त्र विभाग, जयपुर

शिक्षक

अज्ञान का अँधेरा पथ पर जब गहराता है,
ज्ञान की ज्योति जलाने, कौन जिन्दगी में आता है??
कौन है जिसने हमारी मुसीबतों को जाना है,
कौन है जिसने हमारी प्रतिभा को पहचाना है,
किसने हमारी शरारतों को सृजन में बदल दिया,
दैत्य दनुज दानवों को, मनुज में बदल दिया,
स्वभाव पर दुर्भावना का जब अँधेरा छाता है।
दीप की लौ जला, कौन जिन्दगी में आता है??
हम नासमझ थे, जो हमसे उस देव का अपमान हुआ,
जिसने हमें गढ़ा था, उसका न सम्मान हुआ,
उसे किसी आदर की चाह न रही कभी,
पर हमने भी अहंकारवश डाँट न सही कभी,
अधजल गगरी तब छलके, जब अहंकार छा जाता है,
गागर में सागर को भर, कौन जिन्दगी में आता है??
किसने गीली माटी को, अपने हाथों से निखारा है,
रूप देकर ज्ञान का किसने हमें संवारा है,
किसने हमे भटकाव के रास्तों से दूर किया,
पत्थरों की खदान से तराश कर कोहिनूर किया।
चाक पर मिटटी चढ़ा, कुम्हार जो धर्म निभाता है,
चॉक से वो कर्म करने, कौन जिन्दगी में आता है??
हम नासमझ थे, जो हमसे उस देव का मन आहत हुआ,
जिसने हमें रचा था, उसका मन न कभी खुशहाल हुआ,
उसे किसी लाभ की चाह न रही कभी,
पर हमने भी अहंकारवश सीख न मानी कभी,
आज के इस संसार में जब किसी और का सुख नहीं भाता है,
हमारे सुख की कामना लिए, कौन जिन्दगी में आता है??
इन सभी प्रश्नों को सुन, एक ही विचार मन में आता है।
कि सभी मापदंडों पर केवल शिक्षक ही खरा उतरता है।।

- विनिता सोनी

वो बचपन

याद आए वो सारे बचपन के खेल निराले।
वो बाल बिखरे - बिखरे घुंघर वाले,
वो ढीले-ढीले झबले फूलों वाले,
मस्ती भरे वो नैन काले - काले।
जिनमें छिपे थे वो सारे सपने मतवाले,
वो सावन के झूले वो पिता के हिंडोले,
वो थाली, वो माँ के हाथ पकवानों वाले,
वो मिट्टी के खिलौने, वो खेल घर-घर वाले,
वो पल - पल में रुठना, वो सब मनाने वाले,
वो फूलों की बहारे, वो सब खेल हरियाले,
वो काग़ज की कश्ती, वो पानी के नाले,
वो सावन की बारिशें, वो कूकती कोयलें,
वो मिट्टी के घरोंदे, वो मंदिर गावों वाले,
वो केसर के लड्डू, वो खेल सतौले वाले,
वो टीचर के डंडे, वो टिफिन क्लासों वाले,
वो रातों का होमवर्क, वो डर एग्जामों वाले,
होते थे घर का हिस्सा ही सब मोहल्ले वाले,
आज जो पग-पग पर तरक्की पर चाले,
हर पल देखो बदल रहे ये दुनिया वाले,
पल - पल में अपना - पराया करने वाले,
कहाँ गए वो लोग जो हमें पाले??
कैसे इन बढ़ती मुश्किलों को टाले?
इस जीवन गाड़ी को अब तो भगवान
संभाले। क्यूं खा रही ये
इस स्वार्थी दुनिया में हिचकोले??

- विनीता सोनी

मात - पिता

मात-पिता हैं इस संसार में भगवान् - स्वरूप ।
उन्हें अनुकरण करो, बनो उनके अनुरूप
बच्चे होते हैं छवि मात-पिता की
सदैव अनुगामी बनो उनकी संस्कार्ता की
जनम से ही पहले देखो उनका प्यार
तुम्हारे जनम का बेसब्री से करते इंतजार
माँ का प्यार व पिता का अनुसाशन
भरता हैं संस्कारों से ये जीवन
बनते हैं ये संसार में प्रथम गुरु
महिमा अनंत कहा खतम कहा शुरू
जीवन की कठिनाईयों में बनते हैं ढाल
बचाते हैं हर बुराई से तुम्हे संभाल
इच्छा हैं बनू उनकी स्वप्न गरिमा
शान, आन, बान व ज्ञान बनू दे आशीर्वाद माँ

डॉ. मनवीरी रानी

मन के उद्‌गार

1.
कृष्णा को चिढ़ा रही, कृष्ण कृष्ण कहिके
सखियों के मध्य, श्री कृष्ण भी मुसुकात है।
कोऊ कहे गुमान बड़ो, कारे को सुंदरता पे
लाओ सखी इनको, हम मुकुर दिखात है।
कहै कोऊ पट चोर, कोऊ कहे चित चोर
कहे कोऊ ये तो सखी माखन भी, चुरा चुरा खात है।
वेद यू विनोद करे, कृष्ण सखी कृष्ण सो
व्यंग के बचन सुनि, कृष्ण खिल-खिलात है।।

2.
पी ते मिलन हित, तन मन तरपै
नैनत भी झैरी, नीर की लावै।
राह निहारे, पीय आवन की
सुध बुध खोई, इते उते ताके।।
चंचल चरण, रूके नहीं रूकते
कब हुँक घर, कभी द्वार पे धावे।
हारी थकी फिर, बैठी गई घट
वेद छबि मन मैं ही, पी की पावै।

3.
प्रेम विवाह का स्वरूप कैसा होना चाहिए।
मुख छबि देखी, बटिका में सिया जू की,
चारु बिलोचन, अचंचल से हो गए।
राम देखें सिया जू सिया जू राम जी को,
खोई सुध - बुध दोऊ, एक दूजे में खो गए।
मर्यादा पति है वो, उनकी पत्नी है सीता।
आचरण कहो फिर, ऐसे कैसे हो गए।
राम आए गुरु गृह भवानी भवन है सीता,
छुआ नहिं छल, मन निश्छल ही रह गए।
राम कहा गुरू ते, मां ने कहा माता ते,
कछु नहिं राख्यों गोप्य, प्रगट सब हो गए।
सुफल मनोरथ, पूजही मनकामना आशीष
बचन कौशिक भवानी, मुख ते बह गए।
यही है प्रेम जो, राय है तुम्हारी परंतु,
आशीर्वाद जब बड़ों से हो गए।
क्षमा किजै राम जू वेद को नादान जानी,
भाषा में आकै जो, बचन अनुचित कह गए।
जीवन के इस अंधियारे पल में,
केवल कल्पनाओं के ही कल में।
अब मैं अकेला ही बचा हूँ, कहीं
और नहीं कोई, इस मग में।
पथ यह कोई सहज नहीं है।
फिर समर ही तो मेरा जीवन है।
जो इस झिलमिल डग से डरू में,
तो फिर लक्ष्य, बहुत मुश्किल है।
जो पाना तो, बढ़ना होगा,
मुश्किल बड़ी पर लड़ना होगा।
वेद देव पर भरोसा रखकर
आगे तुम्हें तो बढ़ना ही होगा।

5.
सपनों से समझौता मत कर
रूको नहीं तुम राह में थक कर।
मंजिल भले ही दूर बहूत पर
चले चला चल, निज आत्मबल पर।।
सपनों की ही आधार शिला पर,
यर्थात का शुभ भवन बनाकर,
सपने और संजोया कर, पर
सपनों से समझौता मत कर।।

6.
कौन कहता है कि, वो रूबरू नहीं होता।
एक बार 'रु' को अपनी तू भूला देख।
कौन कहता है कि, रहमत उसकी नहीं तुझपे।
एक बार मत में उसके मत मिला के देख।।
कौन कहता है कि बड़े पैमाने है उसके।
एक बार मान अपना तू घटा के देख।
कौन कहता है कि वो पत्थर का है, पिघलता नहीं।
एक बार दर पे उसके, अश्क बहा के देख।
वो दरिया है करूणा का, तू भी डूब जा उसमें।
फिर मौज में अपनी, बस लहराते रहना।
अपने बन्दों की हर हरकत पर उसकी निगाह है।
वरना कोई याद करें उसको, सबके बस की बात नहीं।।

7.
अरे, अरे ये क्या कर रहे हो,
जीवन, जी रहे हो, या मर रहे हो।
कूप मेंढक सी स्थिति बना ली है, अपनी
अभी कूंए में ही हो या निकल रहे हो।।
बाहर आके देखो दुनिया खूबसूरत कितनी है,
कहो बहुत सुदंर है, या बस मोबाइल जितनी है।
छोड़कर इसे घड़ी दो घड़ी मनन भी करो,
विचार करके देखो, क्या तुम्हारी क्षमता बस इतनी है।

8.
तुरंग भग रहे हैं, अपनी गति ते,
मन के हाथों, कमान अब नहीं है।
जहाँ ले जाते, ये रथ रथी को,
चलता उधर है, कोई प्रश्न अब नहीं है।
कहने को मन है, मगर मर चुका है,
चंचल की इतना, अब रूक नहीं रहा है।
चकाचौंध इसको, इतना लुभाती,
क्या भला बुरा है, इसे दिख नहीं रहा है।
मन तो हैं दर्पण, जो चहरा दिखाए
मगर अब ये दर्पण, खुद चहरा बन गया है।
इसको सम्भालें, जो सम्भल सके तो,
न जाने कितनों का, ये काल बन गया है।
मन ही मनुष्य के, बंधन मुक्ति का कारण है,
इस पर नियंत्रण तो, सुखों का संसाधन है।
वेद तत्व जान, लगाम लेके हाथों में,
मन को चलाओ, वर्णित सद्मार्ग में।
यहीं सब जटिलताओं का सुगम निवारण है।
तुरंग भग रहे हैं .....

9
नाथ अब मुझे दुत्कारों तो नहीं।
कारण तो कहो, स्वीकारों क्यों नहीं।।
अकारण करूणाकर, जो कारण पूछोंगे।
तो करूणा ही हे तेरी, बताएंगे यही।।
जो अपने दम पर हम लग जाते किनारे।
तो कहते ही क्यों तुमसे, उभारों तो सही।।
नाथ अब मुझे।
जो तुम कहते कि विकारों के अधीन मै।
तो ये खता किसकी बताओं तो सही।
विषयों का ऐसा जल, जग बीच भरा है।
मैं चु तो कैसे, मुझे बचाओं तो सही।।
नाथ अब मुझे ...
वेद तो स्वरूप है, आपका प्रभो।
अपना रूप वेद को दिखाओ तो सही।
जो भी रहा कारण, अब बताओ ना मुझे
देके क्षमादान अब अपनाओं तो सही।
नाथ अब मुझे

10.
नाथ दया दीनन पर कीजे।
जाचक है प्रभु द्वार तिहारे, विनय मान भी लीजै। नाथ दया
नाथ मैं अब शरण तिहारी, माँ पर प्रभु ना खीजै।
करहु कृपा खर के अरि स्वामी प्रभु मो पर अब रीझै।
तेरी मूरत बहुत- बहुत मनोहर प्रभु मोहे भी दर्शन दीजै।
तेरे चरण अनुग्रह आस मैं, दास या जीवन जीजै।। नाथ दया
एक अपर अरदास है मेरी वा को भी प्रभु पूजै।
कर जोरे तेरे द्वार पड़ा है, मेरा कुछ तो कीजे।।
जो ना हुआ कुछ हंसी हे मेरी, मेरी हंसी ना कीजै।
अपना के वेद को स्वामी, निज चरनन सेवा दीजै।। नाथ दया
तव चरणन के प्रकाश पुंज में मम राह को रोशन कीजै।
अब प्रभु वेद को वेदनाओं से, वेदमय कर दीजै। नाथ दया

- वेद प्रकाश शर्मा
(एम.टेक. प्रोडक्शन)

पृष्ठ 1 का शेष .....

श्रद्धा और धैर्य के साथ मन, वाणी और शरीर से प्राणिमात्र की सेवा में सदा संलग्न रहना ही उनकी तपश्चर्या थी। काम क्रोध - लोभ - मोह से बचना, सदा शुद्ध संकल्पयुक्त रहना ही उनकी तपश्चर्या थी। किसी विषय वृत्ति के कारण विक्षिप्त हो जाने पर उस पर विजय प्राप्त करना व्यवहार काल में छल कपट, धोखा और फरेब से अपने को को दूर रखना उनका मानसिक तप था। असत्य, दुःखदायी, अप्रिय और खोटे शब्दों का त्याग, तथा प्रिय, सत्य, मीठे और मधुर शब्दों का प्रयोग उनका वाचिक तप था। दूसरों की सहायता और सेवा करना, देश और जाति के लिए अपने शरीर के दुःख और कष्ट की परवाह न करना उनका शारीरिक तप था।

मालवीय जी धर्मनिष्ट धर्मज्ञ थे। धर्म में उनकी अचल श्रद्धा थी, धर्म के मूल सिद्धान्तों का उन्हें अच्छा ज्ञान था, वे ही उनके जीवन के आधार थे। वे नित्य विधिपूर्वक पूजा पाठ करते, शास्त्रविहित आचार का पालन करते, श्रीमद्भागवत् तथा श्रीमद्भगवद्गीता आदि ग्रन्थों का अध्ययन करते, पारलौकिक विषयों पर भी समय मिलने पर चिन्तन मनन करते धर्म का प्रसार करते, तथा सदा लोककल्याण में एवं देश के अभ्युदय में संलग्न रहते। उन्हें स्वर्ग और मोक्ष दोनों पर विश्वास था। पर वे इन दोनों में से किसी की कामना नहीं करते थे। वे तो चाहते थे कि वे तप्त प्राणियों के कष्टों का निवारण करें, सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित करे, एवं देश की सेवा करें, और इन सबके लिए फिर जन्म लें।

देशभक्त

मालवीयजी उच्च कोटि के देशभक्त थे। वे अनेक प्रकार के दुःखों, संकटों और कष्टों को सहने करते हुए तथा नाना प्रकार के विघ्नों का मुकाबला करते हुए सदा देशसेवा में लगे रहते थे। देश की स्वतंत्रता, राष्ट्र के गौरव की वृद्धि, तथा जनता का सर्वाङ्गीण उत्कर्ष उनकी देशसेवा के मुख्य लक्ष्य थे। वे सब जातियों सम्प्रदायों और प्रान्तों के भारतीयों को मिलाकर भारतीय राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे। वे एक ही समय में विभिन्न प्रकार के सेवा कार्यों में संलग्न रहते थे।

उनका कार्यक्षेत्र निःसन्देह बहुत ही विस्तृत और व्यापक था। समाजसेवा का कौन ऐसा काम होगा जो उन्होंने न किया हो। सनातन धर्म का प्रचार प्राचीन संस्कृति का समर्थन, हिन्दू हितों की रक्षा हिन्दी का प्रसार देश की स्वतंत्रता, गौ की सेवा, सामाजिक कुरीतियों का विरोध, स्वयंसेवकों का संगठन, नाना ज्ञान विज्ञान की वृद्धि शिक्षा का विस्तार, मल्लशालाओ का उद्घाटन, दीनों के कष्टों का निवारण, स्त्रियों का उत्कर्ष, हरिजनों का उत्थान समाज की आर्थिक उन्नति, लोकतांत्रिक मर्यादाओं की प्रतिष्ठा, देशप्रेम पर आश्रित राष्ट्रीय भावना की पुष्टि, प्रगतिशील सिद्धान्तों का प्रतिपादन देश कालानुकूल संस्कृति का विकास, नवयुग का निर्माण आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान किया। दैवी सम्पत्तियों से विभूषित जीवन को उठाया, अपने व्यक्तित्व का विकास किया।

उनका विचार था कि जो मनुष्य अपने व्यक्तित्व को समाज के पीछे रखता, समाजसेवा करते समय निजी हित की दृष्टिसे कोई ऐसा काम नहीं करता जिससे समाज की हानि हो, वह समाज को ऊँचा उठाता है, और समाज की उन्नति के साथ साथ अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। पर जो मनुष्य अपने को समाज के आगे रखता है। अपने निजी हित पर समाज के हित को न्यौछावर करता है, उसका नैतिक पतन होता है, उसका व्यक्तित्व नीचे गिरता है। उनकी धारणा थी कि जो काम अविवेक से दूसरों को हानि पहुँचाने दिल दुखाने द्वेष और शत्रुता से किया जाता है वह तामसी है, जो काम अपनी स्तुति, पूजा, प्रतिष्ठा और मान के लिए किया जाता है, वह राजसी है। इस प्रकार के कामों से उनके विचार में लाभ के बजाय हानि होती है, कार्यकताओं में ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न होता है, और कार्य संभलने के बजाय बिगड़ जाता है, उनके नैतिक जीवन का विकास भी अवरुद्ध हो जाता है पर ईर्ष्या और द्वेष से मुक्त निष्काम भावना से की गयी सेवा कार्यकर्ताओं के जीवन को निर्मल करती है, ऊँचा उठाती है, तथा सामाजिक कार्यों की समुचित सफलता में सहायक होती है। मालवीयजी निःसन्देह निःस्वार्थ समाजसेवी थे।

सात्त्विक सार्वजनिक जीवन

निष्काम भाव से अनुप्राणित मालवीयजी के कार्य का ढंग भी निराला था। वे सदा सार्वजनिक कार्मों में लगे रहते और उन सबको बड़े पैमाने पर करते थे। पर जैसा कि पुरुषोत्तम दास टंडन जी ने बताया, यश की उन्हें चाह नहीं थी। वे काम स्वयं करते थे, पर कीर्ति और यश के लिए दूसरों को आगे कर देते थे। वे दूसरों की समाजसेवा का आदर करते, और समाज की सेवा में उनकी हिम्मत बढ़ाते थे। अपने साथियों पर वे सदा विश्वास करते, उनके प्रति सद्भावना रखते, और उनके सहयोग और परामर्श की कद्र करते थे। उनका बहुत सा समय साथियों के साथ विचार विमर्श में ही खर्च होता था। वे छोटों की बात को भी धीरज और ध्यान से सुनते, और उनको बतायी अच्छी बात को खुशी-खुशी ग्रहण करते, और उसके लिए उनका सराहना करते थे। वे समाज सेवकों के यश से खुश होते थे, और सबके साथ मिलकर काम करते थे। सात्विक विरोध का आदर करते, पर बेकार के कटाक्ष और तिरस्कार की उपेक्षा करते थे। वे वितंडावद से कोसों दूर भागते थे। किसी की निन्दा करना या किसी के अपयश का बखान करना वे बुरा समझते थे। वे विपक्षी के साथ भी प्रेम, धैर्य और नम्रता से बात करते, विरोधियों के अपशब्द को सुनकर भी उनके लिए कोई बुरी बात कहे बिना विरोध का मुकाबला करते ओर यदि कोई दूसरी बुरी बात कहता तो उसे मना करते थे। इस तरह वे अपनी ओर से वाद-विवाद और विरोध को व्यक्तिगत द्वेष और ईर्ष्या का स्वरूप न देकर मतभेद के स्तर तक सीमित रखते थे। वे वास्तव में विरोध के समय भी मेल का दरवाजा खुला रखते थे। विरोध पक्ष की अच्छी बातों को भी ग्रहण करने को तैयार रहते थे, उसकी समाज सेवा की भी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते थे। यदि किसी एक बात में वे किसी का विरोध करते, तो दूसरी बात में उसके साथ मिलकर काम करने में उन्हें कोई हिचक नहीं होती थी। जैसा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने एक संस्करण में कहा है, दलबन्दी कर नेता बनने की इच्छा से वे (मालवीयजी) कोसों दूर थे। वह जो कुछ करते, उसमें देशभक्ति ओर सेवाभाव सर्वोपरि रहता था। उनकी तबियत ऐसी थी कि जब राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय विचारों को धक्का लग रहा हो, तब वह उसको बर्दाश्त नहीं कर सकते थे।

जनसाधारण की सेवा

जमींदार व्यापारी, राजे महाराजे सभी मालवीयजी का आदर करते, उन्हें पूजनीय समझते, और उनके निर्माण कार्यों में उनकी सहायता करते थे। वे भी उन सबसे प्रेम से मिलते थे। उनका भला चाहते थे। पर उनका हृदय दीन दुःखी जनता के साथ था। जनता का उत्थान वे राष्ट्र की उन्नति के लिए आवश्यक समझते थे, ओर उसके लिए सब कुछ करने को तैयार थे। राजाओं को उनकी यही सलाह थी कि वे अपनी प्रजा की समुचित रक्षा और कल्याण वृद्धि को ही अपना कर्तव्य समझे, कालानुसार अपनी शासन व्यवस्था में सुधार करें। रजवाड़ो में संवैधानिक सरकार प्रतिष्ठित करने की चर्चा जब कभी मालवीयजी करते थे, तब ब्रिटेन की शासन-प्रणाली की तरह शासन व्यवस्था की स्थापना ही उनका लक्ष्य होता था। वे चाहते थे कि राजे महाराजे अपनी इच्छा से अपने अधिकारों को सीमित कर जनता के प्रतिनिधियों को शासन का उत्तरदायित्व हस्तान्तरि कर दें, राजकोष के एक निश्चित सीमित अंश का ही अपने निजी खर्च में प्रयोग करें, जनता के प्रतिनिधियों द्वारा स्वीकृत संविधान द्वारा न्याय का शासन प्रतिष्ठित करें, जनता के मौलिक अधिकारों की रक्षा की समुचित व्यवस्था करें, तथा प्रजा की अभिवृद्धि ही शासन का लक्ष्य निर्धारित करें।

इसी तरह सेठ साहूकारों से घनिष्ठ सम्बन्ध कायम रखते हुए भी उन्हें जनताके हितों तथा सार्वजनिक जीवन की पवित्रता का सदा ध्यान रहता था। इन बातों को ध्यान में रखते हुए जहाँ उन्होंने देश की औद्योगिक उन्नति के लिए देशज उद्योगों के लिए वित्तीय संरक्षण का समर्थन किया, वहाँ मजदूरों के हितों और अधिकारों की समुचित व्यवस्था की मांग को पुष्ट किया प्रतिज्ञा बद्ध श्रम प्रणाली का विरोध किया, इकरारनामे के उल्लंघन पर श्रमिकों तथा कर्जदारों को कैद की सजा देने की व्यवस्था की कड़ी आलोचना की, तथा सन् १९२१ में सेठ साहूकारों को चेतावनी दी कि यदि श्रमिक जनता के कल्याण की ओर समुचित ध्यान नहीं दिया गया तो कम्यूनिज्म के प्रभाव को कानून द्वारा नहीं रोका जा सकेगा। जब सन् १९३० में सरकार के दबाव पर बम्बई के औद्योगिकों ने आयात शुल्क विधेयक की उन धाराओं को भी स्वीकार कर लिया जिन्हें मालवीयजी राष्ट्रहित घातक समझते थे और उनका ध्यान आकृष्ट किया गया कि बम्बई से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को बहुत आर्थिक सहायता प्राप्त होती है, तब उन्होंने केन्द्रिय असेम्बली में स्पष्ट तौर पर कह दिया कि वे राष्ट्रहित पर सौ विश्वविद्यालय न्यौछावर करने को तैयार है, पर राष्ट्र हित विरोधी बात को धन के लोभ से स्वीकार करने को तैयार नहीं। इसी तरह कि वे सरकार से उसका कोई स्वार्थ सिद्ध करा दें तब उन्होंने उस हुंडी को लौटते हुए कहला भेजा कि मैं वही करूंगा जो उचित होगा।

उन्होंने मालगुजारी के स्थायी बन्दोबस्त का समर्थन करने के साथ ही साथ जमींदारों के व्यवहारों पर प्रतिबन्ध लगा कर किसानों के अधिकारों की रक्षा तथा उनके हितों की वृद्धि पर जोर दिया। उनकी धारणा थी कि इस देश में हमारी सहानुभूति का किसानों से अधिक कोई हकदार नहीं। उन्होंने भाग की कि किसानों पर लगान का बोझ कम किया जाय, लगान की व्यवस्था को भी स्थायी बनाया जाय, और उनकी दयनीय दशा को सुधारने का प्रयत्न किया जाय। अभ्युदय के सम्पादकीय विभाग को उनकी हिदायत थी कि उसमें किसानों के हितों की बातें अधिक हों, किसान बडे ही दुःखी है और उनके दुःखों के आगे जमींदारों का जरा भी लिहाज न करों। मालवीयजी चाहते थे कि किसानों को कांग्रेस में शामिल होने के लिए प्रेरित किया जाय, उनके प्रतिनिधियों को बिना शुल्क कांग्रेस के अधिवेशनों में शामिल किया जाये, उनमें राजीतिक चेतना पैदा की जाये। जैसा कि जवाहरलाल नेहरू ने अपने भाषण में बताया मालवीय जी और गांधीजी का ध्यान हमेशा जाता था किसानों की तरफ और उनकी तरफ जो सबसे नीचें तबके के लोग हैं क्योंकि जैसा ये लोग कहते थे कि अगर हिन्दुस्तान में स्वराज्य आ गया और लोग तैयार न हुऐ तो वह निकल भी जायेगा, रहेगा नहीं लोग तैयार हैं तो स्वराज्य आ ही जायेगा और कायम भी रहेगा। जनजीवन का उत्थान पीड़ितों के कष्टों का निवारण जनता के अधिकारों की रक्षा और वृद्धि मालवीयजी के सार्वजनिक कार्यों का अवश्य ही एक प्रमुख लक्ष्य था।

डॉ. ज्योति जोशी

पृष्ठ 1 का शेष (ईमानदारी : एक जीवन शैली)

लिए ईमानदारी को सभी के द्वारा अपने जीवन में पालन करने हेतु दृढ़ प्रतिज्ञ होना चाहिए।

इस दिशा में सरकारी तंत्र के द्वारा ईमानदारी की शपथ, सतर्कता जागरूकता सप्ताह, संविधान दिवस, एकता दिवस, शिक्षक दिवस, योग दिवस, फिट इंडिया जैसे सराहनीय व सकारात्मक प्रयास किये जा रहे है। इन्ही प्रयासों का व मानवीय नैतिक चरित्र के सुधारात्मक आत्ममंथन के कारण 180 देशों के भ्रष्टाचार सूचकांक में तीन पायदानों में सुधार करते हुए भारत 78वें स्थान पर पहुँच गया है (स्त्रोत ज्तंदेचंतमदबल प्दजमतदंजपवदंस त्मचवतज 2019)।

जीवन के प्रति यदि सकारात्मक सोच को रखते हुए हमे सभी ईमानदारी को अपने दैनन्दिनीय जीवन शैली का हिस्सा बना लेंगे तो भारत को भ्रष्टाचार रहित कुशलहाल व विकसित देश बनने से कोई नहीं रोक सकता है।

अतः हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने प्रति, अपने कार्य के प्रति, अपने समाज के प्रति, संस्थान के प्रति, देश के प्रति ईमानदार रहेगें और शपथ लेकर इस मुहित का हिस्सा बनकर व सत्यमेव जयते को साकार करें और देश के स्वतंत्रता सैनानियों के प्रति अपनी श्रद्वांजलि अर्पित कर देश के जननायकों का सपना साकार कर अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करें।

जय हिन्द, जय भारत

अंशु सक्सैना

मैं का अंतर्द्वद्व

मैं आज हूँ,
मैं कल भी था
मैं मजबूर नहीं हूँ,
तभी तो मैं आगे भी खड़ा रहूंगा।
अडिग बन।
मैं साथ लेकर चलने वाला हूँ,
साथ तो मेरे खड़े हैं बहुत
मगर पैर सिर्फ मेरे हैं।
जिन्हें सिर्फ मुझे बढ़ाना है।
मंजिल की तरफ
जो भी करूँगा मैं करूँगा
क्योंकि कुनबे में से,
बलि तो एक की ही चढ़ती है,
क्या यही सोच रख पाऊँगा मैं
हर पल, हर दिन हर सप्ताह
हर पखवाड़े और हर साल
यदि सोच लिया तो करूँगा जरूर,
न सोचा तो भी भुगतना मुझे ही है।
फिर क्यों न हर वक्त को,
हर वस्तु को हर मानव को अपना सोचूं
यही करना होगा मुझे
यदि कुछ करना है मुझे
जो जरूरत होगी करुणा और धीर की
तो राम भी बनना है मुझे।
जब वक्त की मांग होगी तो
परशुराम भी बनूँगा।
मुझमें ही से तो रावण बन जाता है,
जब मैं सत्व में ना रहकर
तम में बदल जाता है।
हाथ भी पकड़ना होगा।
मेरे संग चलने वाले का
और विहग बन दूर गगन के
स्वप्र भी बुनने होंगे।
यदि कुछ करना है मुझे
कितना सामन्जस्य बिठाऊँ
अपनी बेबसी और लाचारी के साथ,
फिर तो शायद मैं जी ही ना पाऊं।
मुझे ललकार खुद बनना होगा,
तभी तो कर पाउँगा
अपने आप को उस झुण्ड से अलग
छंटना होगा अब
यदि कुछ करना है मुझे।

नेमीचंद मावरी निमय
शोधार्थी, रसायन शास्त्र विभाग,
जयपुर

कशिश

वक्त के तराजू पर तू विश्वास करता चल,
हर कदम पर उम्मीदों की श्वास भरता चल,
छद्म रूप धर, कर बहाने असफलताएँ आऐंगी,
विवशता और कर्महीनता के आयाम भी वो लायेंगी।
गर्त में ना झाँकना फिर ना रोक सकेगा कोई छल,
हर कदम पर ....

बुजदिली की बहानों से सदियों पुरानी पहचान है
केहरियों के भेष में भेडिये नादान है
खोज अपने मर्ज को तन्हाईयों की होड़ में,
रंजिशों की रात में भी उज्ज्वल होगा तेरा कल,
हर कदम पर ....

बिम्ब असलियत ना पहचान सका है क्षणभंगुर शीशे बिना
झूठ के भी पैर हैं दुनिया देगी लाखों गिना,
सत्यता को समझ पाना थोड़ा कठिन काम है
झूठ की ही रूह में तू भी सच जन्माता चल,
हर कदम पर ....

मांझी भी तो डालता है नौका तूफानों के बीच में,
जलज भी खिल जाता है जब निरर्थक से कीच में,
फिर क्यों असंभव सब मानकर किस्मत के पीछे भागता,
लगन और विश्वास के तू बस पुल बनाता चल,
हर कदम पर ....

नेमीचंद मावरी निमय
शोधार्थी, रसायन शास्त्र विभाग,
जयपुर

सम्मान : एक आदरपूर्ण भाव

सम्मान -एक सकारात्मक भावना या क्रिया है जिसे किसी महत्वपूर्ण चीज़ के प्रति दिखाया जाता है। यह प्रायः अच्छे या मूल्यवान गुणों के लिए प्रशंसा की भावना व्यक्त करता है। अगर हम इस पर गहन अध्ययन करें तो हमें यह ज्ञात होगा कि हम अपने सम्मान के स्वयं रक्षक भी हैं और उसके उतने ही भक्षक भी। यह ठीक विज्ञान के ऊर्जा सिद्धान्त पर कार्य करता है, जो यह कहता है दी गयी ऊर्जा, और उसके परिणामस्वरूप ली गयी ऊर्जा (या मिली हुई ऊर्जा) में समतुल्यता का सम्बन्ध होता है। ठीक इसी सिद्धान्त के तहत हमारा सम्मान भी कार्य करता है।

हमें यह भलीभाँति समझ लेना चाहिए कि हर तरह की अच्छी बुरी परिस्थितियों के अधिकतर हम ही जिम्मेदार होते हैं। हम सभी ने काफी बार यह महसूस किया होग कि कभी कभी कुछ परिस्थितियाँ ऐसी भी होती हैं जिसमें हमें मिल रहे सम्मान कि शायद ही कोई परवाह होती हो और हम जाने अनजाने में कुछ गलत कर बैठते हैं क्योंकि उस वक्त हमारा मस्तिष्क यह भूल जाता है कि यह सब क्षणिक है और यह हमेशा नहीं रहेगा। इसका कारण कहीं न कहीं हमारा आवेश व अहँकार होता है जो उस परिस्थिति में प्रबल हो जाता है एवं खुद को सर्वश्रेष्ठ समझने की भूल कर बैठता है। इस पर हमारा नियंत्रण होना अति आवश्यक है क्योंकि जो आज है वह कल हो न हो। और साथ ही आगे इसके परिणाम हमारे अनुकूल हो ऐसा जरूरी भी नहीं। जैसा कि यह बात हम सब समझते हैं कि सम्मान को खरीदा नहीं जा सकता है और न ही यह मांगने से मिला करता है। इसे सिर्फ कमाकर हासिल किया जा सकता है।

सम्मान व्यक्ति समूह समुदाय या किसी विशिष्ट कार्यवाही और व्यवहार के प्रति शाबाशी या प्रशंसा करने की भावना है। आज हमारे समाज में यह महत्वपूर्ण है कि हम दूसरों से सम्मान प्राप्त करने से पहले उन्हें सम्मान दें। हम अपने जीवन में मिलने वाले हर किसी का सम्मान करें एवं उतना ही जरूरी यह भी है कि हम ऐसी कार्यों का पालन करें जो सम्मान प्राप्त करने में हमारी सहायता कर सकें। एक व्यक्ति जो अपने व्यवहार से कार्यालय घर या समाज के लिए किए गयी गतिविधियों के माध्यम से संपति कमाता है उसमें सम्मान सर्वप्रथम है। यह प्रायः उम्र का मोहताज नहीं है यह हर पल प्रतिक्षण सबके लिए है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि वक्त के साथ यह घटता नहीं बल्कि निरंतर बढ़ता चला जाता है।

ठीक ज्ञान की तरह जो कभी बाँटने से घटता नहीं। पर सम्मान का एक सबसे बड़ा दुश्मन है और वो है अहम। अहम और सम्मान दोनों ही एक दूसरे से विपरीत रूप में संबंधित हैं। आप जितना अधिक विनम्र होंगे आप उतना ही अधिक सम्मान दें और ले सकते हैं। वैसे तो शब्द सम्मान की कोई विशिष्ट परिभाषा नहीं है और न ही कोई ऐसा सूत्र है जो आपको दूसरों का सम्मान करने में सहायता करेगा। पर यहाँ पर यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि हम एक दूसरे के आदर सत्कार में समाज में सद्भाव लाने के लिए कार्य करें। और हमेशा याद रखें कि सम्मान मांगा नहीं जाता बल्कि अर्जित किया जाता है और सम्मान हमारे महान कर्मों और कार्यों के माध्यम से अर्जित होता है। कभी किसी व्यक्ति को सम्मान देने से पूर्व यह विचार मत करें कि वह व्यक्ति किस पद पर कार्यरत है या वह कितना धनी है, या उसकी उम्र क्या है, यह सब गौण है पहले तो हमें यह समझ लेना चाहिये कि हम सब ईश्वर की जीती जागती संरचना है। पर आज का समाज गौण पर अत्यधिक केन्द्रित हो चुका है। और खुद भी इस दौड़ में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर ली है।

बदलते वक्त के साथ साथ सम्मान की परिभाषा में आए बदलाव को समझा एवं भलीभाँति महसूस किया जा सकता है। मेरे विचार से यह बदलाव नकारात्मक है हम सब के लिए क्योंकि इसमें हमारी हानि है और दूसरी बात है कि यह हमें आंतरिक सुकून नहीं प्रदान करता बल्कि इसमें हमारे स्वार्थ का सम्बन्ध होना नजर आता है जिसके फलस्वरूप आज आप खुद को तो सम्मानित महसूस कर सकते हैं और शायद कल कोनहीं। बात समझने की यहाँ यह है कि इसके जिम्मेदार हम ही तो नहीं। जी देखा जाए तो हम ही हैं इसका कारण कोई और नहीं। इसका एक प्रमुख कारण यह भी है कि आज हम अपनी इच्छाओं एवं जरूरतों के प्रति ज्यादा आसक्त एवं सजग हो गयें है इनको अत्यधिक प्राथमिकता भी दे दी है और यह सिलसिला निरन्तर जारी है। सदाचार का स्थान स्वार्थीपन ने ले लिया है। और कहीं न कहीं हमने इसे जरूर महसूस किया होगा परंतु इसके बावजूद भी हममें परिवर्तन की भावना नज़र नहीं आती।

यह हम सब के लिए काफी निराशाजनक है एवं उतना ही चिंतनीय विषय भी। और इस पर बदलाव सिर्फ हमारी खुद की समझदारी, स्वभाव विचारों एवं हमारे संस्कारों पर शत-प्रतिशत निर्भर करती है। क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि आप जैसे बीज बोयेंगे वैसे ही फल उगेंगे। जिंदगी से मिलने वाले अनुभवों के अलावा शिष्टाचार विनम्रता और हमारी उत्कृष्ट कार्यशैली हमको लोगों के सम्मान के काबिल बनाती है। हम हमेशा ऐसा बने कि लोग हमारी हमेशा दिल से तारीफ करें। हमें कभी ऐसा नहीं बनना चाहिए कि हमारी बड़ी-बड़ी डिग्रीयाँ व उनके साथ हमारा अहंकार ही हमारी पहचान बने बल्कि सदा ऐसे बनने की चाह रखनी चाहिए कि हमारे ज्ञान के साथ - साथ हमारा विनम्र व्यवहार भी हमारी पहचान बन सके। और हमारे मुख से निकले दो मीठे बोल ही किसी अन्य परिजन को अपना बनाने के लिए काफी हो जायें।

- अंकुर गुप्ता
शोधार्थी, रसायन शास्त्र

लेख वनवास कथा

ग्रंथों के अनुसार दीपावली के दिन राम लक्ष्मण, माता सीता व हनुमान के साथ वनवास के पश्चात् अध्योध्या नगरी लौटे। आईये परिचित होते हैं रामायण के ऐसे दो किरदारों से, जिनके प्रभु वात्सल्य के आगे स्वयं राम भी निःशब्द थे।

पहले किरदार हैं गिद्धराज जटायु। वनवास के दौरान पंचवटी की ओर चहलकदमी कर रहे राम, लक्ष्मण और माता सीता से प्रथम दफ़ा मुलाकात हुई। स्वयं को गरूड़देव का वंशज एवं राजा दशरथ का मित्र बताया। पर्णकुटी के आस पास विचरण कर रक्षा करने का वचन दिया।

रावण द्वारा माता सीता का हरण किये जाने पर विमान का पीछा कर रावण से युद्ध किया। पंख कटने पर धरती पर गिर पड़े, और राम को संदेश देने के लिए प्राण को रोके रखा।

वन वन ढूँढ रहे रघुराई।
जनक दुलारी कहीं न पाई।
गिद्धराज ने किया प्रणाम।
पतितपावन सीताराम।

माता सीता के बारे में राम लक्ष्मण को सूचित किया और प्रभु के करकमलों में ही गति को प्राप्त हो गए।

दूसरी किरदार हैं शबरी। ऋषि मातंगी की शिष्या, राम की परम्भक्त। गुरु ने बैकुण्ठ जाने से पहले कहा था राम उनसे मिलने एक दिन अवश्य आयेंगे। उसी पल को देखने के लिए जी रही थी। हर पल उनके स्वागत की तैयारी में जुटी रहती। रास्ता पुष्पों से सजाती चुन चुन कर मीठे फल लातीं। एक दिन सीता की खोज में निकले राम लक्षमण उनके द्वार आ ही गए।

चख चख कर फल शबरी लाई।
प्रेम सहित खाए रघुराई।
ऐसे मीठे नहीं हैं आम।
पतितपावन सीताराम।

अपने गुरु का संदेश राम लक्ष्मण को दिया कि महाबली सुग्रीव से मित्रता कर रावण पर विजय प्राप्त करोगे। सुग्रीव तक पहुँचने का मार्ग दिखाकर राम लक्ष्मण को धन्य किया और उनकी आज्ञा से बैकुण्ठ की ओर चल बसीं।

- मेहुल सोनी
तृतीय वर्ष, धातुकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी

मैं तेरा होना चाहता हूँ

इस कैद-ए-जिंदगी से आज़ाद होना चाहता हूँ
ऐ जिंदगी अब मैं तेरा होना चाहता हूँ
होंठो पे हँसी तो मेरे हमेशा रहती है
गमों में डूबकर एक बार रोना चाहता हूँ
बहुत कुछ मैंने पाया है बहुत कुछ पाना बाकी है
तुम्हारा होकर बस एक बार मैं कुछ खोना चाहता हूँ
गुज़ार जिंदगी के पल मुझे ये इल्म हुआ है
बाज़ार का पुराना सा वही खिलौना चाहता हूँ।
बहुत रह कर अकेले तुमसे दूर होकर माँ
मैं तेरी गोद में फिर एक बार सोना चाहता हूँ
उगे बहार फिज़ा में हो रूह को सुकूँ मेरे
मैं ऐसे अकबर-ए-शजर के बीज बोना चाहता हूँ
मैं तेरा होना चाहता हूँ, मैं तेरा होना चाहता हूँ।

- मंयक गुप्ता
द्वितीय वर्ष, जनपथ अभियांत्रिकी विभाग

जमाने की खुशी

ज़माने को भी ज़माने से, पूछे ज़माना हुआ। कि तेरी खुशी का
अब न जाने, क्या ठिकाना हुआ।
कभी हँसती - मुस्कुराती थी, वो तेरे आँगन में।
कभी चहकती थी झूलों पर, वो तेरे फागन में।।
आज ये आँगन भी क्यों, उसी से बेगाना हुआ?
ज़माने को भी ज़माने से, पूछे, ज़माना हुआ?
कहीं बचपन के खेलों में थी, कहीं भादों के मेलों में थी।
कहीं पहाड़ी की बेलों में थी, कहीं रेत के रेलों में थी।
आज ये बचपन भी क्यों, उसी से अनजाना हुआ?
ज़माने को भी ज़माने से, पूछे ज़माना हुआ??
कभी चहकती-महकती थी, वो ख़्वाबों के मेलों में।
कभी तड़पती - छटपती थी, वो विरह की वेलों में।।
आज ये ख्वाबों का भी क्यों उसी से इतराना हुआ?
ज़माने को भी ज़माने से, पूछे ज़माना हुआ??
कहीं चूड़ी की खनखन में थी, कहीं मीठी-सी अनबन में थी।
कहीं फूलों की चमकन में थी, कहीं भँवरों की गुँजन में थी।
आज ये फूलों का भी क्यों, उसी से मुरझाना हुआ।
ज़माने को भी ज़माने से, पूछे ज़माना हुआ??
कभी खिलखिलाती - झिलमिलाती थी, तारों सी रातों में।
कभी टिमटिमाती सी फिरती थी, बिटिया की बातों में।
आज ये बातों का भी क्यों दुःख का तराना हुआ?
ज़माने को भी ज़माने से, पूछे ज़माना हुआ??
कहीं रेत के चौके में थी, कहीं मेघ / वेग के झौंके में थी।
कहीं जीत के मौके में थी, कहीं प्रीत के टौके में थी।
आज ये जीत का भी क्यों, न उसी से मिलवाना हुआ?
ज़माने को भी ज़माने से, पूछे ज़माना हुआ??
कभी बलखाती - इठलाती थी, तेरे ही वृथों में।
कभी उड़ती थी चिड़िया सी, ऊँचे आकाशों में।।
आज ये उड़ानों का क्यों, उसी से बिछड़ना हुआ?
ज़माने को भी ज़माने से, पूछे ज़माना हुआ??
ज़माने को भी ज़माने से, पूछे ज़माना हुआ।
कि तेरी खुशी का अब न जाने, क्या ठिकाना हुआ।

- विनीता सोनी
जनपद अभियात्रिकी, द्वितीय वर्ष

लक्ष्य प्राप्ति प्रसन्नता अर्थात् सफलता

आज के व्यस्तम् जीवन में सब अपनी सफलता के प्रयास में दौड़ रहे हैं। आज अपनी सफलता के लिये सभी सचेत हैं। सभी सफलता की तलाश और उसके विकल्पों के पीछे भाग रहे हैं। क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है। कि सफलता के कुछ सूत्रों का वर्णन करना चाहूँगा जिससे हम स्वयं को केन्द्रित कर सफल बन सकते हैं।

हमारी सफलता हमारे लक्ष्यों पर निर्भर करती है। हम क्या चाहते हैं, जीवन में हमारे क्या लक्ष्य है ये ही तो है हमारी सफलता।

हमें हमारी सफलता प्राप्त करने के लिये कुछ लक्ष्य निर्धारित करने होंगे।

1. लक्ष्य आसान हैः- हम जीवन की सफलता के लिये कुछ ना कुछ लक्ष्य अवश्य लेकर चलते हैं। प्रारम्भ में ये हमें असम्भव सा प्रतीत होता है कि हम लक्ष्य प्राप्त करेंगे या नहीं लेकिन लक्ष्य प्राप्त करना आसान है। बस हमें अपनी धारणाओं को बदलना होगा। धारणाएँ सिर्फ आधी अधूरी जानकारी या सुनी सुनाई बातों पर निर्भर करती है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमें धारणाओं की सच्चाई तक जाना होगा। हमें सतर्क रहकर अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ते रहना है। हम जो लक्ष्य तय करें उसके लिये यह भी आवश्यक है कि हम उसकी एक सीमा रेखा भी तय कर लें जिससे हम लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकें।

2. लक्ष्य प्राप्ति अर्थात् स्वयं को पंसद करना।

लक्ष्य प्राप्ति के लिए स्वयं को हमें अपनी योग्यता पर विश्वास करना होगा। अपने सभी गुणों को पंसद करना होगा ऐसा करने से हमें भीतर से आत्मप्रेरणा मिलेगी और हम निर्बाध गति से लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ सकेंगे।

3. अपने व्यक्तिगत की सराहना करना -

हमें ईमानदारी से अपने लक्ष्य के लिए अपने व्यक्तिगत की सराहना करनी होगी। हमारा संकल्प रहेगा कि हम सही मार्ग व सही तरीकों को अपनाकर वो कर सकते हैं जो हम चाह रहे हैं। यदि हम हमारे व्यक्तित्व की सराहना कर सकते हैं तो हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति भी कर सकते हैं।

4. सक्रिय भावनाओं की जागृति से लक्ष्य की प्राप्ति

सक्रिय भावनाओं को हम स्वयं से जितने सशक्त ढंग से संचित कर आगे बढ़ेंगे हम उतनी ही शीघ्रता से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ेंगे। हमारे भीतर जी सकरात्मक ऊर्जा संचित है वो हमारे उत्साह आत्मविश्वास और प्रसन्नता का केन्द्र है। ये सकारात्मक ऊर्जा ही हमें सक्रिय भाव से लक्ष्य प्राप्ति की ओर ले जाती है। अतः हमारी सोच सदैव सकारात्मक हो।

5. प्रभावशाली लोगों से साथ अच्छी नेटवर्किंग

समाज के प्रभावशाली लोग सदैव अपने लक्ष्य को प्राप्त करके ही एक अच्छी और मजबूत स्थिति में खड़े होते हैं। ये समाज के आईकोन है। इनमें साहस और निर्णय लेने की अद्भूत क्षमता होती है इनकी भावनाएं सकरात्मक सोच रखती है। जिससे सारे निर्माण कार्य सफल होते हैं। यदि हमारी नेटवर्किंग अर्थात् समूह में भी कुछ ऐसे लोग जुड जाए तो हम भी आसानी से अपने लक्ष्य का मार्ग तय कर सकते हैं।

6. सोच का दायरा बढाएँः-

संकुचित सोच सदैव से ही लक्ष्य प्राप्ति में रोड़ा रही है। सोच का दायरा बढ़ाने से और प्रतिष्ठावान व अपने क्षेत्र में स्थापित लोगों का अनुसरण करने से लक्ष्य प्राप्ती की राहे आसान हो जाएगी। हमें अपनी सोच का दायरा बढाना होगा।

7. रोज पढ़ने की आदत और ना पसन्द लोगों का साथ : -

हमें रोज पढ़ने की आदत को विकसित करना होगा। रोज पढ़ने की आदत सोच का दायरा विस्तृत करती है। लक्ष्य का मार्ग प्रशस्त करती है। कुछ लोगों को हम ना पसन्द करते हैं लेकिन उनमें भी कुछ अच्छाईयाँ होती है। बस हमें उन अच्छाईयों की तार्किक रूप से ग्रहण करना चाहिये। इस पर चिन्तन और मनन करके ही आत्मसात करना चाहिये। हमारे विपरीत खड़े लोगों के गुण भी कुछ हद तक हमें सफलता की ओर ले जा सकते हैं।

अतः लक्ष्य प्राप्ति के लिए ये बहुत ही आवश्यक है कि हम समाज के सभी लोगों से कुछ ना कुछ ग्रहण अवश्य करें, चाहे हम कुछ को ना पसंद ही क्यों ना करते हो। अपने निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सभी आयामों के मध्यनजर ईमानदारी से सतत् प्रयास करते रहे। प्रयास में असफलताएँ भी आती है किन्तु उससे घबराना नहीं है वो एक सबक होती है। इसी तरह हम अच्छाईयों को अनुसरण करके अपने लक्ष्य तक आसानी में पहुँच सकते हैं।

हमारे लक्ष्य प्राप्ति की राहें हमें सफलता और प्रसन्नता का अनुभव तो करायेंगी ही साथ ही हमें जीवन में जीने की एक नयी ऊर्जा मिलेगी।

- अंशु सक्सेना, विभाग - लेखा शाखा

ॐ सिद्धांत विहीन जीवन का कोई मूल्य नहीं। ॐ

प्रकाशक एवं **सम्पादक आचार्य (डॉ.) ज्योति जोशी**, मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 9413971604, ई-मेल : malaviyaprakash.lokmat@gmail.com
लेजर टाईप सैटिंग एवं मुद्रण स्थल : द् प्रिण्ट पैलेस, कैलगिरी रोड, मालवीय नगर, जयपुर-302 017 • फोन : 0141-4002016 • www.theprintpalace.com